

टिटिहरी का जोडा और समुद्र का अभिमान

समुद्रतट के एक भाग में एक टिटिहरी का जोडा रहता था। अंडे देने से पहले टिटिहरी ने अपने पति को किसी सुरक्षित प्रदेश की खोज करने के लिये कहा। टिटिहरे ने कहा - "यहां सभी स्थान पर्याप्त सुरक्षित हैं, तू चिन्ता न कर।" टिटिहरी - "समुद्र में जब ज्वार आता है तो उसकी लहरे मतवाले हाथी को भी खींच कर ले जाती हैं, इसलिये हमें इन लहरों से दूर कोई स्थान देख के रखना चाहिये।"

टिटिहरी - "समुद्र इतना दुःसाहसी नहीं है कि वह मेरी सन्तान को हानि पहुँचाये। वह मुझसे डरता है। इसलिये तू निःशंक होकर यही तट पर अंडे दे।"

समुद्र ने टिटिहरे की ये बातें सुन ली। उसने सोचा - "यह टिटिहरी बहुत अभिमानी है। आकाश की ओर टांगे करके भी यह इसीलिये सोता है कि इन टांगों पर गिरते हुए आकाश को थाम लेगा। इसके अभिमान का भंग होना चाहिये।" यह सोचकर उसने ज्वार आने पर टिटिहरी के अंडों को लहरों में बहा दिया।

टिटिहरी जब दूसरे दिन आई तो अंडों को बहता देखकर रोती-बिलखती टिटिहरे से बोली - "मूर्ख! मैंने पहिले ही कहा था कि समुद्र की लहरे इन्हे बहा ले जायंगी। किन्तु तूने अभिमानवश मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। अपने प्रियजनों के कथन पर भी जो कान नहीं देता उसकी दुर्गति होती है।

इसके अतिरिक्त बुद्धिमानों में भी वही बुद्धिमान सफल होते हैं जो बिना आई विपत्ति का पहले से ही उपाय सोचते हैं, और जिनकी बुद्धि तत्काल अपनी रक्षा का उपाय सोच लेती है। 'जो होगा, देखा जायगा' कहने वाले शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।"

यह बात सुनकर टिटिहरे ने टिटिहरी से कहा - मैं 'यद्भविष्य' जैसा मूर्ख और निष्कर्म नहीं हूँ। मेरी बुद्धि का चमत्कार देखती जा, मैं अभी अपनी चोंच से पानी बाहिर निकाल कर समुद्र को सुखा देता हूँ।"

टिटिहरी - "समुद्र के साथ तेरा बैर तुझे शोभा नहीं देता। इस पर क्रोध करने से

क्या लाभ? अपनी शक्ति देखकर ही हमें किसी से बैर करना चाहिये। नहीं तो आग में जलने वाले पतंगों जैसी गति होगी।"

टिटिहरा फिर भी अपनी चोंच से समुद्र को सुखा डालने की डींगें मारता रहा। तब, टिटिहरी ने फिर उसे मना करते हुए कहा कि जिस समुद्र को गंगा-यमुना जैसे सैंकड़ों नदियाँ निरन्तर पानी से भर रही हैं उसे तू अपने बूँद-भर उठाने वाली चोंच से कैसे खाली कर देगा ?

टिटिहरे को अपने अभिमान का पछतावा हुआ और टिटिहरी से क्षमा मागी, और कोई उपाय निकालने को कहा। तब, टिटिहरी ने कहा - "यदि हम अन्य पक्षियों की भी सलाह ले तो कोई ना कोई हल निकल आएगा। कई बार छोटे-2 प्राणी मिलकर अपने से बहुत बड़े जीव को भी हरा देते हैं, जैसे चिड़िया, कठफोड़े और मेंढक ने मिलकर हाथी को मार दिया था।

टिटिहरा - "अच्छी बात है। मैं अभी जाकर दूसरे पक्षियों की सहायता से समुद्र से अपने अंडों को कैसे वापिस लाऊँ का उपाय ढूँढकर लाता हूँ।"

यह कहकर उसने बगुले, सारस, मोर आदि अनेक पक्षियों को बुलाकर अपनी दुःख-कथा सुनाई। उन्होंने कहा - "हम तो अशक्त हैं, किन्तु हमारा मित्र गरुड अवश्य इस संबन्ध में हमारी सहायता कर सकता है।" तब सब पक्षी मिलकर गरुड के पास जाकर रोने और चिल्लाने लगे - "गरुड महाराज! आप के रहते हमारे पक्षिकुल पर समुद्र ने यह अत्याचार कर दिया। हम इसका बदला चाहते हैं। आज उसने टिटिहरी के अंडे नष्ट किये हैं, कल वह दूसरे पक्षियों के अंडों को बहा ले जायगा। इस अत्याचार की रोक-थाम होनी चाहिये। अन्यथा संपूर्ण पक्षिकुल नष्ट हो जायगा।"

गरुड ने पक्षियों का रोना सुनकर उनकी सहायता करने का निश्चय किया। उसी समय उसके पास भगवान् विष्णु का दूत आया। उस दूत द्वारा भगवान् विष्णु ने उसे सवारी के लिये बुलाया था। गरुड ने दूत से क्रोधपूर्वक कहा कि वह विष्णु भगवान् को कह दे कि वह दूसरी सवारी का प्रबन्ध कर ले। दूत ने गरुड के क्रोध का कारण पूछा तो गरुड ने समुद्र के अत्याचार की कथा सुनाई।

दूत के मुख से गरुड के क्रोध की कहानी सुनकर भगवान विष्णु स्वयं गरुड के घर गये। वहाँ पहुँचने पर गरुड ने प्रणामपूर्वक विनम्र शब्दों में कहा - "भगवन्! आप के आश्रम का अभिमान करके समुद्र ने मेरे साथी पक्षियों के अंडों का अपहरण कर लिया है। इस तरह मुझे भी अपमानित किया है। मैं समुद्र से इस अपमान का बदला लेना चाहता हूँ।"

भगवान विष्णु बोले - "गरुड! तुम्हारा क्रोध युक्तियुक्त है। समुद्र को ऐसा काम नहीं करना चाहिये था। चलो, मैं अभी समुद्र से उन अंडों को वापिस लेकर टिटिहरी को दिलवा देता हूँ। उसके बाद हमे अमरावती जाना है।"

तब भगवान ने अपने धनुष पर 'आग्नेय' बाण को चढाकर समुद्र से कहा - "दुष्ट! अभी उन सब अंडों को वापिस देदे, नहीं तो तुझे क्षण भर में सुखा दूंगा।" भगवान विष्णु के भय से समुद्र ने उसी क्षण अंडे वापिस दे दिये।

सीख : अभिमान का सिर नीचा।

एडिटर का एंडे डर मभद्र का म्छिभान

मभद्रुए कएक हाग भएक एडिटर का एंडे रकड घ। म्छे डेवे मे पेरुल एडिटर का न-
मपन पेडि क किमी म्छिउ पुम की पए करन के लिय केर। एडिटर ने केर - "बक म्छी
मभद्र पटापु, म्छिउ रु, उ, गिनु न कर।"

एडिटर - "मभद्र म्छे एव मुड रु उ उमकी लरु भउवल का घी क छी पीए कर ल रेडी
रु, उमलिय केम डन लरु भे डर करे मभद्र एपि करेपन गारिया।"

एडिटर - "मभद्र उरुन ए: भाकमी नकी रुकै वरु भरी म्छुन क केनि परु गारियावेरु म्छम-
रुड रु उमलिय उे नि:मके रुकेर वकी उए पर म्छे डे।"

मभद्र न एडिटर की वगे उ म्छली। उमन मेगए - "बक एडिटर म्छु म्छिभानी रु सुकाम
की डर एंग केर क छी बक उमीलिय मेगए रुकै डन एंग पर गिरु रुए सुकाम क घाभ लगे।
उमक म्छिभान का रुग रुने गारिया।" बक म्छे कर उमन एव मुन पर एडिटर का म्छे के
लरु भेवेरु डिया।

एडिटर एव डभर डिन मुने उ म्छे के वेरुड एपि कर रडी-गिलापडि एडिटर मे गेली - "भद्र !
भने पेरिल की कक घ कि मभद्र की लरु डन वेरु ल रेवगी। किनु उनु म्छिभान वम भरी गड
पर एडन नकी डिया। मपन पियएन के केवन पर छी ए केन नकी डडे उमकी डडि रुडी रु
उमक म्छेरि रु, म्छिभान भे छी वकी म्छिभान मडल रुडे रु ए गिन मुने विपडि, का परुल मे की
उपाव म्छे उ रु, उर एनकी म्छिउडल म्छनी रक का उपाव म्छे लडी रु ए केगे, एपि
एवगा" करुन वेरु मीपु की नपु रु रु।"

बक गड म्छकर एडिटर ने एडिटर म केर - "भद्र म्छिभान एमो भद्र डर निपु म्छनी रु भरी
म्छि, का एभडु डपिडी ए, भे छी म्छनी एगे म्छनी गारि निकाल कर मभद्र क भेपा डडे
रु।"

एडिटर - "मभद्र क भेघ उर गरे उरु मेहे नकी डडे। उम पर रुए करन मे केरु लरु? म्छनी
मकि, एपि कर की रुम किमी म्छे करन गारियावेरु उ म्छे म्छे लन वेरु पेडंग एमो गडि
रुगी।"

एडिटर डिर छी म्छनी एगे म्छे म्छे क भेपा रुलन की डीग भेरुड रु। उर, एडिटर न-
डिर उम भेन करु रुए कक कि एम मभद्र क गेगा-वभन एमि म्छे रुने डिया निरनु
पानी म्छे रुकी रु उम उे म्छे वेरु-रु उरुन वेरु एगे म्छे म्छे पाली कर डगे ?

एडिटर के म्छेपन म्छिभान का पकड व रुड डर एडिटर म्छे भा भागी, डर करे उपाव
निकालन के केर। उर, एडिटर न केर - "बकि रुम म्छे पबिय की छी मला ल उे केरे न
करे रुल निकल म्छगा। करे गर रुए-उ पुणी मिल कर म्छे मे वेरुड रु रु एव क छी रु डडे
रु, एमो गारिया, कं डडे डर म्छे न मिल कर रुकी क भेरु डिया घ।"

एडिटर - "म्छे गड रु भे छी एकर डभर पेबिय की म्छे वड म्छे म्छे म्छे के केमे-
वपिम ला उ का उपाव डड कर ला रु।"

बक करु कर उमन वेगलु, भेरु, भरे मुडि म्छे के पबिय के वेरु कर म्छनी ड:प-कघा म्छे।

उरु केर - "रुम उ म्छे म्छे, किनु रुभार भिडु गरुड म्छे म्छे उम म्छे म्छे म्छे म्छे म्छे
कर म्छे रु उर म्छे मिल कर गरुड क पेम एकर रुने डर गिला लगे - "गरुड

भेरु ए! म्छे करु रु म्छे पेबिय पर मभद्र न वेरु म्छे गरुड कर डिया। रुम उमक

मडल गारुड रु म्छे उमन एडिटर क म्छे नपु किय रु, कल वरु डभर पेबिय के म्छे के
रु ल रेवगा। उम म्छे गरुड की रुके-घाभ रुनी गारिया म्छे म्छे म्छे पबिय नपु रु एवगा
।"

गरुड न पबिबिका रने भनकर उनकी भलायत करन के निमन्त्र किया। उभी मभय उभक पोम
 रुगवाना विधुका एउ मुया। उभ एउ एदना रुगवान विधुका उभ मेवारी क लिब गेलाया घ। गरुड
 न एउ म केपेपत्रक कला कि वरु विधुका रुगवान क केरु ए कि वरु एभरी भवारी का पत्रक कर ल
 । एउ न गरुड क केपे का कार ए पका उ गरुड न मेभरु क मेट्टार की कषा भनारें।
 एउ क भोप म गरुड क केपे की कला नी भनकर रुगवान विधुका गरुड क भेर गवावेका पीरुगिन
 पर गरुड न प एभपत्रक विनभ मगुभ केला - "रुगवाना! मुप क मुमभ का मरिभान करक मेभरु
 न भेर मोषी पबिबिका मेट्ट के मपकर कर लिवा कोउम उरु भु ही मपभानितु किया कोभ
 मभरु म उम मपभान का मला लने एरुगु रु।"
 रुगवान विधुके - "गरुड! उभरुा के ये कियुका कोभभरु क रिभा काभ नली करन एरुगिब
 घ। एल, भ मही मभरु म उन मरु के वैपिम लकेर एरुगरी क एलवा एउ रु उभक मरु
 रुभमभरावती एन को।
 उरु रुगवान न मपन एनध पर 'मुगु' म ए क एरुकर मभरु म केला - "एधु मही उन मरु मरु
 क वैपिम एरु, नली उ उेरु बे ए रु भमोपा एग।"
 रुगवान विधुका रुव म मेभरु न उभी ब ए मरु वैपिम ए एरु।

भीप : मरिभान का भिर नीण।

मनरुए - विरु के ल एला